FOR MLIS STUDENTS

Course : - Masters of Library and Information Science (MLIS)

Paper : - Paper-I

Prepared By: - Aftab Ahmad, Assistant Librarian, Faculty Library Science
School of Library and Information Sciences, Nalanda Open University

Topic: - Role of Libraries in Knowledge Management

Scanned with CamScanner

इकाई–20

ज्ञान प्रबन्ध में ग्रन्थालयों की भूमिका
(Role of Libraries in Knowledge Management)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

20.0 उद्देश्य (Objectives)

20.1 परिचय (Introduction)

20.2 ज्ञान प्रबन्धन के कार्य में ग्रन्थालयी के उत्तरदायित्व
(Responsibilities of Librarian in Knowledge Management)

20.3 ज्ञान प्रबन्धन में ग्रन्थालयी के कार्य
(Functions of Librarian in Knowledge Management)

20.4 सारांश (Summary)

20.5 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

20.6 प्रस्तावित पाठ (Suggested Reading)

20.0 उद्देश्य (Objective)

पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र ऐसी संस्थाएं हैं जो ज्ञान प्रबंधन के कार्यों को सम्पादित करने में सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम के रूप में अपनी भूमिका निभा सकती हैं। प्रस्तुत पाठ में हम वर्तमान समाज में ज्ञान प्रबंधन की उपयोगिता को समझने का प्रयास करेंगे। ज्ञान प्रबंधन के कार्य में ग्रन्थालयों की भूमिका को जानने के लिये हम ग्रन्थालयों की उन विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डालेंगे जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ज्ञान प्रबंधन के विभिन्न कार्यों में सहायक सिद्ध हो सकती हैं। तत्पश्चात् हम ज्ञान प्रबंधन के वातावरण में एक पुस्तकालय कर्मी/ग्रन्थालयी की भूमिका को समझने का प्रयास करेंगे। हम ज्ञान प्रबंधन के परिदृश्य में एक ग्रन्थालयी के उत्तरदायित्वों पर चर्चा करेंगे। साथ ही ज्ञान प्रबंधन के वातावरण में एक ग्रन्थालयी के कार्यों को विस्तार से समझेंगे। अन्त में हम 'पुस्तकालय में ज्ञान प्रबंधक के रूप ग्रन्थालयी के विभिन्न स्वरूपों का विस्तार से वर्णन करेंगे।

Scanned with CamScanner

20.1 परिचय (Introduction)

समाज में पुस्तकालयों की भूमिका प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण मानी जाती रही है। उस काल से ही पुस्तकालय प्रलेखों एवं सूचनाओं को संग्रहित करने एवं उनके रखरखाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। वर्तमान युग में तकनीकी के विकास के साथ–साथ पुस्तकालयों के क्रियाकलापों में भी कुछ परिवर्तन आया है। पूर्व में जहां इन पुस्तकालयों को मानवीय सहयोग एवं हस्तक्षेप से संचालित किया जाता था, वहीं आज विभिन्न प्रकार के तकनीकी समाधानों जैसे सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर की उपलब्धता के कारण पुस्तकालय की विभिन्न गतिविधियें स्वचालित रूप से सम्पादित की जाती हैं। इन परिवर्तनों के बावजूद आज के तकनीकी युग में भी पुस्तकालयों की वहीं महत्वपूर्ण भूमिका है जो पूर्व में रहा करती थी। प्रलेखों एवं सूचनाओं के प्रसंस्करण एवं रख–रखाव में पुस्तकालयों की सक्षमता ही वर्तमान में इनके विभिन्न संगठनों जैसे शैक्षिक, वैज्ञानिक, व्यवसायिक, प्रबन्धन, उत्पादन आदि में महत्वपूर्ण वजूद को सुनिश्चित करती है। इन सभी प्रकार के संगठनों में पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए इन संगठनों के मूल उद्देश्यों की प्राप्ति एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

ज्ञान प्रबन्धन इस तथ्य पर ही आधारित है कि उपलब्ध ज्ञान के समुचित प्रयोग को सुनिश्चित करते हुए ज्ञान का प्रबन्धन कैसे किया जाए। जैसा कि यह स्पष्ट हो चुका है कि ज्ञान प्रबन्धन पूर्णतः व्यक्ति आधारित होता है, अतः ऐसे में पुस्तकालयों की ज्ञान प्रबंधन में भूमिका बहुतँ बढ़ जाती है। सूचना के प्रसंस्करण एवं उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान यह स्पष्ट होना चाहिए कि जिस सूचना का उत्पादन किया जा रहा है वह किसके लिए है? उसे कैसे हस्तगत/स्थानान्तरित किया जाए एवं उसका अधिकतम उपयोग कैसे हो? इन सभी तथ्यों को निर्धारित करने का कार्य एक पुस्तकालय ही कर सकता है। ज्ञान प्रबन्धन में पुस्तकालय की भूमिका को निम्नलिखित तथ्यों एवं योगदानों के आधार पर समझा जा सकता है–

1. ज्ञान–प्रबन्धन के कार्य में संलिप्त व्यक्तियाों/कर्मियों, सामग्रियों एवं धन के बारे में प्रर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है। इन सभी तथ्यों की पहचान एक पुस्तकालय ही सम्पादित कर सकता है। इन सभी तथ्यों के गुणवत्तापूर्ण प्रबंधन में एक कुशल पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है।
2. ज्ञान–प्रबन्धन की प्रक्रिया में यह आवश्यक है कि उसमें प्रयुक्त किये जाने वाले विभिन्न सम्भावित महत्वपूर्ण स्रोतों के बारे में पर्याप्त जानकारी हो, जिससे उन स्रोतों का अधिकतम उपयोग किया जा सके। यह कार्य एक पुस्तकालय के द्वारा ही आसानी से किया जा सकता है।
3. ज्ञान प्रबन्धन की प्रक्रिया में दस्तावेज प्रबन्धन, अनुक्रमणीकरण, डेटाबेस तथा शब्दकोष (Thesaurus) का निर्माण आदि समस्त महत्वपूर्ण कार्य हैं, जो कि ज्ञान प्रबन्धन का आधार स्तम्भ हैं। मुख्यतः एक पुस्तकालय व्यवसायी के द्वारा ही ये समस्त प्रक्रियायें गुणवत्ता के साथ सम्पादित की जा सकती हैं। पुस्तकालय के ऐसे सभी कार्य ज्ञान प्रबन्धन में पुस्तकालय की भूमिका को महत्वपूर्ण बनाते हैं।

Scanned with CamScanner

4. एक पुस्तकालय व्यवसायी ही ज्ञान प्रबन्धन की प्रक्रिया की गुणवत्ता, दक्षता, कमियों एवं समस्याओं को विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में भली प्रकार से समझने में समर्थ होता है।

5. ज्ञान प्रबन्धन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है ज्ञान साक्षरता का यथासम्भव विस्तार। पुस्तकालय अपनी प्रकृति, कार्यों एवं सेवाओं के दृष्टिकोण से सूचना साक्षरता को स्थापित करने में पारंगत होते हैं। अतः वे ही ज्ञान प्रबंधन के कार्य को सुविधाजनक तरीके से गुणवत्तापूर्वक सम्पादित कर सकते हैं।

6. जिस तरह से पुस्तकालयों के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को सूचना एवं सूचना सेवा प्रदान करने में समय एवं उसका प्रबंधन एक महत्वपूर्ण बिन्दु होता है उसी तरह से ज्ञान प्रबंधन में भी ज्ञान को संग्रहित एवं विस्तारित करने में समय एवं सामर्थ्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस तरह से एक पुस्तकालय अपनी स्थापित दक्षताओं के आधार पर ज्ञान प्रबंधन के कार्य को गुणवत्ता के साथ सम्पादित कर सकता है।

7. एक पुस्तकालय व्यवसायी इस बात से स्पष्टतौर पर अवगत होता है कि कोई उपयोगकर्ता अपने लिए महत्वपूर्ण ज्ञान को कैसे तत्काल अर्जित करे अथवा सीखे। वह इस उद्देश्य हेतु प्रयुक्त की जाने वाली विभिन्न प्रकार की विधियों के प्रयोग का जानकार होता है एवं उन विधियों का समय पर उपयोग कर सकता है। इस तरह का अनुभव एवं जानकारी ज्ञान प्रबन्धन के उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु सहयोगी होती है।

8. ज्ञान प्रबन्धन के लिए यह आवश्यक है कि हम पाठक की आवश्यकताओं की प्रर्याप्त जानकारी रखें। इस कार्य को एक पुस्तकालय व्यवसायी सर्वश्रेष्ठ तरीके से सम्पादित करने में समर्थ होता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय व्यवसायी नेटवर्किंग के विभिन्न अनौपचारिक माध्यमों के द्वारा उपयोगकर्ताओं को उनसे सम्बन्धित विभिन्न विषय विशेषज्ञों से सम्पर्क स्थापित कराने में दक्षता रखते हैं।

9. एक पुस्तकालय कर्मी उपयोगकर्ता की आवश्यकता को समझते हुए उसके इच्छित प्रलेख की खोज के कार्य में दक्ष होता है।

10. वर्तमान परिदृश्य में विभिन्न पुस्तकालय व्यवसायी सूचना के अभिलेखन एवं वितरण के कार्य में सूचना तकनीकी के प्रयोग हेतु पहले से ही प्रशिक्षित होते हैं।

11. सामान्यतः विभिन्न पुस्तकालयों के पुस्तकालय कर्मी अपने पुस्तकालय से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान में परस्पर सहयोगी भूमिका निभाते हैं। ज्ञान प्रबंधन के दृष्टिकोण से इस तरह का परस्पर सहयोगात्मक रवैया अत्यधिक कारगर साबित होता है।

12. पुस्तकालय कर्मी नवीन ज्ञान, जानकारियों एवं दक्षताओं को अर्जित करने हेतु सदैव इच्छुक होते हैं। वे आवश्यकता पड़ने पर तरह–तरह के शैक्षिक जोखिम उठाने में भी नहीं झिझकते। पुस्तकालय कर्मियों का इस तरह का स्वभाव एवं रवैया ज्ञान प्रबंधन के नये–नये उपकरणों के प्रयोग की दिशा में सहयोग प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

उपर्युक्त उध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि केवल एक पुस्तकालय व्यवसायी ही संग्रहित ज्ञान का संरक्षक होता है, साथ ही वह नये ज्ञान के लिए एक समर्थ उत्पादक की तरह भी अपनी भूमिका निभाता है। एक ग्रन्थालयी की भूमिका आज के इलेक्ट्रानिक वातावरण में और भी अधिक बढ़ गयी है। तकनीकी ने सामान्य पुस्तकालयों को सूचना केन्द्रों के रूप में परिवर्तित कर दिया है। इस परिवर्तन के कारण पुस्तकालय से जुड़े विभिन्न सभी क्षेत्रों में एक स्पष्ट परिवर्तन परिलक्षित होता है। ज्ञान–प्रबन्धन के दर्षष्टिकोण से भी ग्रन्थालयी की भूमिका अत्यंत विस्तृत हो गयी है। आज वह सूचना एवं ज्ञान के उत्पादन से लेकर, प्रसंस्करण, वर्गीकरण एवं वितरण तक की सभी भूमिकाओं का समुचित निर्वहन करता है।

20.2 ज्ञान प्रबन्धन के कार्य में ग्रन्थालयी के उत्तरदायित्व (Responsibilities of Librarian in Knowledge Management)

1. विस्तृत और श्रेष्ठ विविध सार्वभौमिक संगठनात्मक विकास के लिए पुस्तकालय अथवा उसकी इकाई को सामरिक (रणनीतिक) सहायता प्रदान करना।
2. ज्ञान प्रबंधन के बेहतर परिणाम हेतु पुस्तकालय अथवा सूचना तंत्र की निवर्तमान कार्य प्रणाली में रणनीतिक परिवर्तन की अगुवायी करना।
3. पुस्तकालय में ऐसी रणनीति का विकास करना जिसके माध्यम से कर्मचारियों को पुस्तकालय की उद्देश्य प्राप्ति के कार्यो में और अधिक वचनबद्धता के साथ शामिल किया जा सके।
4. संगठनात्मक विकास से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं की पहचान एवं उनका निदान करना।
5. संगठन में सीखने की प्रक्रिया तथा सम्बन्धित पाठ्यक्रम के विकास हेतु पर्याप्त प्रयास करते हुए उन्हें लागू करना।
6. संगठन के बाह्य कर्मचारियों हेतु रणनीति का विकास एवं नेतष्त्व करना।
7. कर्मचारियों हेतु आन्तरिक योग्यता समीक्षा प्रक्रिया का प्रबंधन करना।
8. संगठन के कर्मचारियों की संतुष्टि को आंकने हेतु सर्वेक्षण प्रक्रिया सम्पादित करना।

20.3 ज्ञान प्रबन्धन में ग्रन्थालयी के कार्य (Functions of Librarian in Knowledge Management)

किसी पुस्तकालय में एक पुस्तकालय कर्मी के द्वारा ज्ञान प्रबन्धन की प्रक्रिया में निम्नलिखित कार्यों का सम्पादन किया जाता है–

1. एक पुस्तकालय कर्मी के द्वारा ज्ञान प्रबन्धन के कार्य को सम्पादित करने हेतु ज्ञान की खोज करने, प्रतिचित्रण (Mapping) करने, फिल्टरिंग करने, पैकेजिंग करने एवं प्रसारित करने का कार्य किया जाता है।

Scanned with CamScanner

2. एक पुस्तकालय व्यवसायी विभिन्न व्यक्तियों के गर्भित ज्ञान को एक साझा संसाधन में परिवर्तित करते हुए उसे उपयोगी बनाने का प्रयास करता है।
3. पुस्तकालय कर्मी उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को जानने, उनसे संबन्धित संसाधनों को चिन्हित करने एवं उनकी सहभागिता को सुनिश्चित करते हुए उनके प्रदर्शन की उत्कृष्टता में आने वाली रूकावटों को चिन्हित करने हेतु विभिन्न प्रकार के विष्लेषण करता है।
4. एक ग्रन्थालयी विभिन्न प्रकार के कार्यों एवं गतिविधियों के लिए ज्ञान के स्थानान्तरण को सुनिश्चित करता है।
5. वह पुस्तकालय में होने वाले विभिन्न प्रकार के संगठनात्मक परिवर्तनों का प्रबंधन करने में समर्थ होता है।
6. ग्रन्थालयी विभिन्न लोगों के कार्य करने की जीवंतता को बनाये रखने के लिए सूचनाओं को उपलब्ध कराता है।
7. एक पुस्तकालयाध्यक्ष अपने संगठन में सीखने के स्वयं निर्देशित तरीके को विकसित कर सकता है।
8. ग्रन्थालयी एक ऐसी व्यवस्था का विकास कर सकता है जिसमें विभिन्न व्यक्तियों के विचारों को सीधे 'सम्पादित किये जा रहे कार्यों' तक स्थानान्तरित किया जा सके।

'इन्साइक्लोपीडिया आफ लाइब्रेरी एण्ड इन्फार्मेशन साइन्स' (2010) में ज्ञान प्रबन्धन के परिदृश्य में ग्रन्थालयी की अपरिहार्य भूमिका का उल्लेख निम्न स्वरूपों में किया गया है–

ज्ञान अधिकारी (Knowledge Officer)

ग्रन्थालयी एक ज्ञान अधिकारी के रूप में ज्ञान प्रबन्धन के उद्देश्यों एवं संगठन के उद्देश्यों तथा रणनीतियों के मध्य तालमेल स्थापित करते हुए विभिन्न कार्य सम्पादित करता है।

अधिगम अधिकारी (Learning Officer)

अधिगम अधिकारी ये निश्चित करते हैं कि संगठन विभिन्न सर्वोत्तम अभ्यास प्रणालियों को अपनाते हुए एक अधिगम संगठन की तरह कार्य करता रहे।

ज्ञान प्रबन्धक (Knowledge Manager)

ज्ञान प्रबन्धक के रुप में ग्रन्थालयी विभिन्न आन्तरिक एवं वाह्य ज्ञान के अधिग्रहण एवं प्रबन्धन के कार्य के लिए उत्तरदायी होता है।

नालेज नेविगेटर (Knowledge Nevigator)

नालेज नेविगेटर के रूप में एक ग्रन्थालयी यह स्पष्ट रूप से जानता है कि इच्छित ज्ञान कहाँ पाया जा सकता है। नालेज नेविगेटर कभी–कभी नालेज ब्रोकर (Knowledge Broker) के रूप में भी जाने जाते हैं।

Scanned with CamScanner

ज्ञान–संश्लेषक (Knowledge Synthesizer)

एक ज्ञान संश्लेषक अपने संगठन की भविष्य की स्मषति के लिए वर्तमान के महत्वपूर्ण ज्ञान के अभिलेखन के लिए उत्तरदायी होता है। कभी–कभी ये नालेज स्टीवर्ड (Kncwledge Steward) भी कहे जाते हैं।

विषय वस्तु संपादक (Contant Editor)

यह किसी भी विषय की विषयवस्तु की संरचना तथा कोडिफाइंग के लिए उत्तरदायी होते हैं, इस रूप में ये विषयवस्तु प्रबन्धक (Content Manager) के रूप में भी जाने जाते हैं। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत ज्ञान के संग्रहण एवं प्रलेखन से सम्बन्धित निम्न प्रकार की भूमिकाएं सम्मिलित होती हैं–

- वेब विकासक (Web Developer)
- इलेक्ट्रानिक प्रकाशक (Electronic Publisher)
- इन्ट्रानेट प्रबन्धक (Intranet Manager)
- विषय–वस्तु प्रबन्धक (Content Manager)

उपर्युक्त भूमिकाओं के अलावा एक ग्रन्थालयी निम्नलिखित कुछ अन्य भूमिकाओं का भी सम्पादन करता है–

अधिगम–आधारित भूमिका (Learning oriented roles)

ग्रन्थालयी इस रूप में एक प्रशिक्षक, सरलीकरण करने वाला, अनुभवी परामर्शदाता एवं एक अच्छे शिक्षक के रुप में कार्य करता है।

मानव संसाधन भूमिका (Human Resources roles)

ज्ञान आधारित संस्कषति एवं व्यवहार के विकास के लिए योजनाओं एवं प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित करने का कार्य करता है।

सहायता गतिविधि (Help desk activities)

एक ग्रन्थालयी ज्ञान प्रबन्धन आधारित सेवाओं एवं उनसे सम्बन्धित प्रशिक्षण आधारित सूचनाओं के वितरण का कार्य करता है। यह कार्य एक ज्ञान सहायक कार्यालय (Knowledge Suport Office) के द्वारा भी सम्पादित किया जा सकता है।

20.4 सारांश (Summary)

इस पाठ में हमने सूचना समाज में ज्ञान प्रबंधन की उपयोगिता को समझने का प्रयास किया। ज्ञान प्रबंधन के उद्देश्य से पुस्तकालयों की विभिन्न भूमिकाओं का विस्तार से वर्णन किया। ज्ञान प्रबंधन के दृष्टिकोण से एक ग्रन्थालयी की भूमिका पर चर्चा की। ज्ञान प्रबंधन के दृष्टिकोण से ग्रन्थालयी के विभिन्न उत्तरदायित्वों को चिन्हित किया, एवं अन्त में ज्ञान प्रबंधक के रूप में ग्रन्थालयी के विभिन्न स्वरूपों को स्पष्ट करते हुए उनके कार्यों को समझाने का प्रयास किया।

Scanned with CamScanner